02 अप्रैल2022, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:08 से 6:38 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

वर्ष : 45, अंक : 01
अप्रैल (प्रथम), 2022 (वीर नि.संवत्-2548)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित अर्ह पाठशाला की अनोखी प्रस्तुति -

ARHAM ANNUAL FEST - 2022

ऑनलाइन पाठशालाओं में अग्रणी विश्वविख्यात् अर्हं पाठशाला के 3 वर्ष के सफल संचालन के उपलक्ष्य में भगवान महावीर के जन्म दिवस के अवसर पर अर्हं पाठशाला लेकर आया है तत्त्वप्रचार व संस्कारों का नया आयाम। पण्डित टोडरमल स्मारक भवन के परिसर में 14 अप्रैल से 17 अप्रैल 2022 तक आयोजित इस फेस्ट में विविध रोचक गतिविधियाँ सम्पन्न होंगी, जिसके माध्यम से नए रूप में धार्मिक संस्कारों के महत्त्व को समझाया जाएगा। इस अवसर पर अर्ह अध्यापकों, अनेक विद्वानों एवं दुनियाभर में व्याप्त अर्हं विद्यार्थियों को परस्पर में मिलने का अवसर प्राप्त होगा। फेस्ट 10 वर्ष से 25 वर्ष की आयु वाले विद्यार्थियों की मुख्यता से आयोजित किया जा रहा है। समारोह की विस्तृत आमंत्रण पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 4 व 5 पर देखें।

शाश्वत अष्टाह्निका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1) अजमेर (राज.) : यहाँ 10 से 18 मार्च 2022 तक श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के अन्तर्गत श्री कहान समयसार सम्प्राप्ति शताब्दी वर्ष एवं फाल्गुन माह के अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार महामण्डल विधान का आयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में पण्डित समकितजी शास्त्री एवं पण्डित दिव्यांशजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ। शोभायात्रा के उपरान्त ध्वजारोहण श्री नीरजजी जैन (उपमहापौर) एवं श्रीमती रूबीजी जैन (पार्षद) ने किया। मण्डल-उद्घाटनकर्ता श्री पुखराजजी पहाड़िया एवं जिनवाणी विराजमानकर्ता श्री प्रदीपजी-कुसुमजी चौधरी किशनगढ़ रहे।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रात: समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधनी), दोपहर में क्रमबद्धपर्याय तथा रात्रि में संयमप्रकाश ग्रंथ के आधार पर मार्मिक व्याख्यान हुए एवं 14 मार्च को समयसार कीर्ति-स्तम्भ स्थापित हुआ, जिसके अनावरणकर्ता श्री जितेन्द्रजी सेठी परिवार इन्दौर एवं श्री दिनेशजी नलिनीजी परिवार मुम्बई थे। अन्त में आभार-प्रदर्शन श्री नरेशजी लुहाड़िया ने किया एवं सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री प्रकाशजी जैन के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के लाइव प्रसारण में अनुज जैन छिन्दवाड़ा, आभास जैन व पलाश जैन जबलपुर का सहयोग प्राप्त हुआ।

2) जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के अन्तर्गत अष्टाह्निका महापर्व का आयोजन हुआ। प्रतिदिन पंचतीर्थ जिनालय में कविवर संतलालजी द्वारा रचित सिद्धचक्र मण्डल विधान में समागत पूजायें सम्पन्न हुईं एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार ग्रन्थ पर आधारित प्रवचनों का प्रसारण किया गया। रात्रि में समयसार पर डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील के प्रवचन हुए। (शेष पृष्ठ 3 पर..)

महाविद्यालय का सुयश

राजस्थान विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित महाकवि माघ महोत्सव में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की ज्ञाता कक्षा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने नुक्कड़ नाटक एवं स्वरचित कविता स्पर्धा के माध्यम से जनसमूह को कर्म सिद्धान्तादि से अवगत कराकर सम्पूर्ण विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया, इसके अलावा वाद-विवाद व एकल गायन प्रतियोगिता में भी अपनी सहभागिता दर्ज की।

34 सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

सातवें अध्याय का सार (जैन मिथ्यादृष्टियों का विवेचन)

परीक्षारहित आज्ञानुसारी धर्मधारक व्यवहाराभासी...

बहुत से जीव आज्ञानुसार जैनी होते हैं। जैसी शास्त्रों में आज्ञा है, उसीप्रकार मानते हैं; परन्तु आज्ञा की परीक्षा नहीं करते। अतः वे सभी परीक्षा से रहित, आज्ञा के अनुसार, धर्म को धारण करने वाले मिथ्यादृष्टि हैं। यदि आज्ञा मानने मात्र से धर्म हो जाए, तो सभी मतवाले धर्मात्मा हो जाएंगे; क्योंकि वे भी उनके शास्त्रों में कही गई बातों के अनुसार ही प्रवृत्ति करते हैं, इसलिए जिनवचन की परीक्षाकर उसकी सत्यता को पहचानकर जिन-आज्ञा मानना ही योग्य है।

टोडरमलजी शिष्य के मुख से तीन तर्क देते हुए कहते हैं कि शास्त्रों में दस प्रकार के सम्यक्त्व में एक आज्ञा सम्यक्त्व एवं चार प्रकार के धर्मध्यान में एक आज्ञा विचय धर्मध्यान कहा है और सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में निशंकित को पहले स्थान पर रखा है, तो फिर शास्त्रों की आज्ञा मानने वाला मिथ्यादृष्टि कैसे हो सकता है?

पण्डितजी स्वयं ही समाधान करते हुए कहते हैं कि शास्त्रों में कितने विषय तो ऐसे हैं जिनकी प्रत्यक्ष-अनुमानादि द्वारा परीक्षा हो सकती है, उनकी तो परीक्षा करना तथा जिन विषयों की प्रत्यक्ष-अनुमानादि द्वारा परीक्षा नहीं हो सकती, उन्हें आज्ञा से स्वीकार करने का उपदेश है; लेकिन प्रयोजनभूत तत्त्वों के सम्बन्ध में तो परीक्षाकर श्रद्धान को दृढ़ करने का ही उपदेश है।

प्रयोजनभूत तत्त्वों की परीक्षा करने पर जो शास्त्र प्रामाणिक हों, उनके सभी कथन प्रामाणिक और जिनमें प्रयोजनभूत कथन ही अन्यथा प्ररूपित किए गए हो, उनके सभी कथन अप्रामाणिक जानना; क्योंकि लोक में जो पुरुष अप्रयोजनभूत कार्यों में भी झूठ नहीं बोलता, वह प्रयोजनभूत कार्यों में झूठ कैसे बोलेगा?

यहाँ कोई कहे कि हम तो छद्मस्थ हैं यदि हमसे अन्यथा परीक्षा हो जाए तो बहुत बिगाड़ होगा? उनसे कहते हैं कि यदि प्रमाद छोड़कर निष्पक्ष होकर परीक्षा करोगे तो वह सच्ची ही होगी। जब पूर्वाग्रह व हटाग्रह के कारण भलीप्रकार परीक्षा न करें, तब अन्यथा परीक्षा होती है।

तथा तूने कहा कि जिनवचन में शंका करने से सम्यक्त्व में दोष लगता है। सो 'न जाने यह किसप्रकार संभव है' ऐसा मानकर निर्णय ही न करें तब शंका नामक दोष लगता है; परन्तु निर्णय करने की भावना से यदि जिज्ञासा उत्पन्न हो तो वहाँ सम्यक्त्व में दोष नहीं लगता। यदि निर्णय की भावना दोष हो तो अष्टसहस्री में आज्ञाप्रधानी से परीक्षाप्रधानी को उत्तम क्यों कहते? स्वाध्याय के अंगों में पृच्छना तथा प्रमाण व नय से पदार्थों के निर्णय का उपदेश किसलिए देते?

जो लोग देखा-देखी में धर्म करते हैं, उनका धर्म ज्यादा समय तक निभता नहीं है और जो लोग परीक्षाकर, हित-अहित का विचार कर धर्म को स्वीकार करते हैं, उनके धर्म को दुनिया की कोई भी ताकत रंचमात्र भी हिला नहीं सकती।

कितने ही पापी पुरुषों ने कषायवश कल्पित कथन किए हैं और उन्हें जिनवचन ठहराया है। वहाँ उन्हें जैनमत के शास्त्र जानकर प्रमाण करें, तो बुरा ही होगा। जिसप्रकार किसी ठग ने किसी साहूकार के नाम से स्वयं ही पत्र लिखकर किसी साहूकार को भेज दिया हो और वह साहूकार उस पत्र की परीक्षा न करें, तो धन के ठगाए जाने से दरिद्री ही होगा। उसीप्रकार किसी पापी पुरुष ने आचार्यों के नाम से स्वयं ही कोई कल्पित कथन किया हो और तू उसकी परीक्षा न करें, तो श्रद्धा के ठगाए जाने से मिथ्यादृष्टि ही होगा।

यहाँ कोई कहे कि गोम्मटसार में ऐसा कहा है कि सम्यग्दृष्टि जीव यदि अज्ञानी गुरु के निमित्त से झूठ का भी श्रद्धान करे, तो भी आज्ञा मानने से वह सम्यग्दृष्टि ही है। उसे कहते हैं कि जो पदार्थ प्रत्यक्ष-अनुमानादि गोचर नहीं है या अतिसूक्ष्म होने से जिनका निर्णय नहीं हो सकता, उनकी अपेक्षा से यह कथन है।

पण्डितजी कहते हैं कि कितने ही जीव परीक्षा तो करते हैं; परन्तु मूलभूत विषयों की परीक्षा नहीं करते। वे दयालु हैं या नहीं, वे शीलवान है या नहीं, वे पूजा-प्रभावनादि करते हैं या नहीं, उनके चमत्कारादि होते हैं या नहीं - इसप्रकार परीक्षा कर इन्हीं कारणों से जिनमत को अच्छा जानकर जैनधर्म को अंगीकार करते हैं, तो यह सभी कार्य तो अन्यमतों में भी देखे जाते हैं।

जैनधर्म में तो सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को मोक्षमार्ग कहा है। इनके स्वरूप का जैसा निरूपण जिनमत में है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं है; इसलिए यही जिनमत का सच्चा लक्षण है, यही जिनधर्म की पहचान है, जैनधर्म का प्राण है। जहाँ वीतरागता का पोषण हो, विषय-कषायादि का निषेध हो, उन्हीं शास्त्रों को प्रामाणिक जानना।

अन्त में पण्डितजी कहते हैं कि इतना तो है कि जिनमत में पाप की प्रवृत्ति विशेष नहीं हो सकती और पुण्य के निमित्त भी बहुत हैं। सच्चे मोक्षमार्ग के कारण भी वहाँ बने रहते हैं, इसलिए जो परीक्षारहित आज्ञानुसारी जैन है, वे भी औरों से तो भले ही हैं।

इसप्रकार परीक्षारहित आज्ञानुसारी का वर्णनकर अब सांसारिक प्रयोजनार्थ धर्मधारक व्यवहाराभासी का वर्णन करेंगे। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

3) **देवलाली (महा.) :** यहाँ पूज्य श्रीकानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में समयसार मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रातः विधान व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के समयसार एवं पण्डित आकेशजी उभेगाँव के प्रवचनसार ग्रन्थ पर व्याख्यानों का लाभ मिला। विधान पण्डित दीपकजी धवल व पं. उर्विषजी शास्त्री के सहयोग से हुआ।

4) **उदयपुर (राज.) :** यहाँ श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर प्रात: पण्डित खेमचंदजी द्वारा सिद्धचक्र विधान की जयमाला का मर्म समझाया गया। सायंकाल पण्डित नीलेशजी शास्त्री द्वारा समयसार एवं पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा श्रावक के आचार-विचार पर चर्चा की गई। विधान आयोजनकर्ता श्री भगवतीलालजी-ललितजी डूंगरिया परिवार उदयपुर थे।

5) **सम्मेद शिखर :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में पंचमेरू नंदीश्वर विधान का आयोजन किया गया। बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के दोनों समय स्वाध्याय के अतिरिक्त पण्डित चर्चितजी शास्त्री, पण्डित संजयजी खनियांधाना व पण्डित सुमितजी शास्त्री छिंदवाड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला।

6) **शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर विजयपुरम में श्री पंचमेरू नंदीश्वर विधान का आयोजन पण्डित अमितजी शास्त्री के सहयोग से हुआ, जिसमें डॉ. दीपकजी शास्त्री एवं ब्र. सुनीलजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

7) **चिखली-बुलढाणा (महा.)** : यहाँ श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में नव लब्धि विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. जवाहरजी बेलोकर, पं. महावीरजी बेलोकर, पं. अक्षयजी चव्हाण, श्री भरतभाई बेलोकर, डॉ. पी. पी. जैन एवं श्री अंबेकर गुरुजी का समागम प्राप्त हुआ।

8) **मुंबई :** यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज बृहद मुंबई के तत्त्वावधान में मुम्बई के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में **जवेरी-बजार** में पण्डित अनुभवजी खनियांधाना, **दादर** में पण्डित विवेकजी जैन, **मलाड़** में पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, **घाटकोपर** में पण्डित विनीतजी शास्त्री, **दहीसर** में पण्डित जगदीशजी भायंदर, **वसई** में पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, **बोरीवली** में पण्डित विपिनजी शास्त्री एवं **भायंदर** में पण्डित अनिलजी शाह द्वारा महती धर्म प्रभावना की गई।

पंच-दिवसीय नयचक्र संगोष्ठी सम्पन्न

19 से 23 मार्च 2022 तक पण्डित अरुणजी मोदी परिवार मकरोनिया सागर के सौजन्य से **'जिनवरस्य नयचक्रम्'** विषय पर आध्यात्मिक संगोष्ठी का भव्य आयोजन डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के मार्गदर्शन में किया गया।

डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन तथा सर्वोदय अहिंसा के संयोजन में सम्पन्न पांच सत्रों में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित हेमचन्दजी हेम भोपाल, पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजयजी शास्त्री दौसा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे, डॉ. दीपकजी शास्त्री जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अमितभैया विदिशा, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री (इसरो), पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित राजेन्द्रजी शास्त्री आदि वरिष्ट विद्वानों का समागम प्राप्त हुआ।

सभी वक्ताओं ने विविध रोचक विषयों के माध्यम से नयों के स्वरूप को आध्यात्मिक व दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। परस्पर हुई गहन वार्ताओं में अनेक नवीन रहस्य उद्घाटित हुए। सभी सत्रों के अन्त में पण्डित अरुणजी मोदी सागर ने समस्त विद्वानों व श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुनि भगवंतों को समर्पित 'अहो भाव' का विमोचन

तीर्थधाम मंगलायतन : यहाँ 26 मार्च 2022 को श्री आदिनाथ कुन्दकुन्द कहान दि. जैन ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रवचनों में से संकलित मुनि भगवंतों के प्रति महिमावर्धक १००८ बोलों का 'अहो भाव' नामक पुस्तकाकार रूप में विमोचन हुआ।

विमोचन समारोह की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथियों में श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, श्री स्वप्निलजी जैन, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. योगेशचंदजी शास्त्री, ब्र. कल्पनाबेन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री आदि की उपस्थिति रही। पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा ने पुस्तक के महत्त्व से सभा को परिचित कराया। संचालन पण्डित समकितजी शास्त्री ईसागढ़ व मंगलाचरण आर्जव जैन ने किया।

THE GREATEST JAIN FEST AWAITS YOU

Arham fest 2022

प्रसिद्ध जैन मंदिरों के दर्शन

विश्व प्रसिद्ध महावीर जयंती जुलूस

भरत का अन्तर्द्वन्द्व (नाटक)

हेरिटेज वॉक

मोक्षमार्ग प्रकाशक की हस्तलिखित प्रति के दर्शन

लाइव सेमिनार

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के साथ पर्सनल टाइम

Scan to Register

14th TO 17th APRIL 2022

अपना रेजिस्ट्रेशन करें : PTST.LIVE पर अथवा WhatsApp करें: +91-8949033694

Venue :
Pandit Todarmal Smarak Bhawan, Jaipur

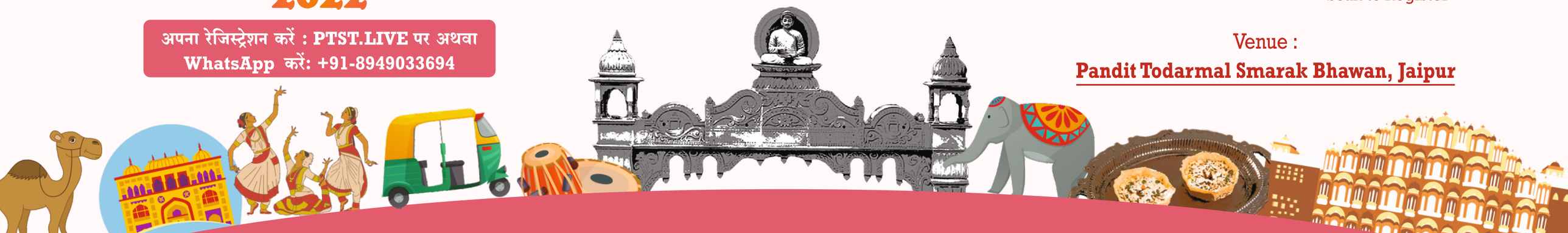

• द्वितीय शतक : रोला शतक •

-डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

कर्त्तापन की बुद्धि से इतने बोझिल हो।
उसके नीचे दबे जा रहे हो क्यों भाई!।।
कुछ विचार करने की शक्ति क्षीण हो गई।
इसकारण यह बात समझ में न आ पाई।।७९।।

फेरफार करने की भावना उचित नहीं है।
जो जैसा हो रहा सहज स्वीकार करो तुम।।
व्यर्थ विकल्पों से कुछ भी न होने वाला।
आकुलता ही हाथ लगेगी और नहीं कुछ।।८०।।

अरे विकल्पों के अनुसार काम ना होते।
अत: निरर्थक ही समझो तुम उनको भाई !।।
किन्तु सार्थक भी कह सकते हो तुम उनको।
कर्मबन्ध में वे निमित्त होते हैं तुमको।।८१।।

अनुभव से है सिद्ध और जिनवाणी कहती।
तथा निरन्तर गुरुदेव भी समझाते हैं।।
बोलो भाई! फिर भी यह मन नहीं मानता।
भवसागर का अभी किनारा बहुत दूर है।।८२।।

आदिनाथ ने समझाया मारीचि न माना।
क्योंकि भव का अभी किनारा बहुत दूर था।।
शेर ने माना क्योंकि किनारा पास आ गया।
काललब्धि के बिना अरे कुछ समझ न आता।।८३।।

भवसागर का अरे किनारा लाना हो तो।
क्या करना है हमें बताओ पूज्य गुरुजी!।।
कुछ भी करना नहीं, सहज होना है भाई!।
अरे सहजता ही में तो सुख-शान्ति समाई।।८४।।

ज्ञानी[१] ने जो जाना सब स्वीकार किया वह।
उसमें कुछ भी संशोधन का भाव न आया।।
रहे एकदम शान्त निराकुल अपने में ही।
अपनेपन के साथ हो गये इकदम तन्मय।।८५।।

पर से इकदम भिन्न न उनमें कुछ कर सकता।
यद्यपि अपने भावों को मैं ही करता हूँ।।
पर अपने में कुछ करने का भार नहीं है।
जो कुछ होना है पहले से ही नक्की है।।८६।।

केवलज्ञानी ने जाना पल-पल का सबकुछ।
भावी में भी जो होना वह भी जाना है।।
वह वैसा ही होगा उनने यह भी जाना।
अत: हमारे माथे पर कुछ भार नहीं है।।८७।।

वह सब स्वीकृत हमें सहज ही है हे जिनवर!।
उसमें कुछ भी फेरफार का भाव नहीं है।।
अत: न कुछ भी करने की आकुलता भाई!।
अत: हमारे जीवन में सुख शान्ति समाई।।८८।।

भवसागर का अरे किनारा जिनका आता।
उनको ही तो सहज सहजता सहज सुहाती।।
है अनन्त संसार उन्हें यह नहीं सुहाती।
उनको तो यह दुनियादारी ही भाती है।।८९।।

अरे हमें तुम निकट भव्य लगते हो भाई!।
और किनारा भवसागर का आया समझो।।
इस सम्बन्धी प्रश्न सहज ही आया तुमको।
इसके लिये तुम्हें देते सौ बार बधाई।।९०।।

निहाल हो गये हम तुमसा साधर्मी पाकर।
साधर्मी का मिलन भाग्य से ही होता है।।
आज हमारा महाभाग्य जागा है समझो।
जो हमने तुम जैसा सत[१] साधर्मी पाया।।९१।।

१. केवलज्ञानी, २. सज्जन

(क्रमश:)

कोटा में विधान व दीक्षांत समारोह

कोटा : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 17 मार्च 2022 को श्री अष्टपाहुड़ मण्डल विधान एवं 18 मार्च 2022 को श्री तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान का आयोजन विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं सहयोगी विधानाचार्य पण्डित यशजी शास्त्री पिड़ावा के सहयोग से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड का समागम प्राप्त हुआ। साथ ही आचार्य धरसेन महाविद्यालय का दसवाँ विदाई एवं दीक्षांत समारोह श्री पंकजजी मेहता की अध्यक्षता व श्री पवनजी जैन कोटा के मुख्यातिथ्य में हुआ। विद्यार्थियों को गुरुजनों का मंगल आशीष प्राप्त हुआ। महाविद्यालय द्वारा छात्रों को **'आगम शास्त्री'** की उपाधि से अलंकृत किया गया। समस्त कार्यक्रम का निर्देशन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज व तन्मयजी-ध्याताजी बजाज कोटा ने किया।

170 तीर्थंकर विधान सम्पन्न

कोटा (राज.) : यहाँ बोरखेड़ा स्थित निर्माणाधीन स्वर्ण मंदिर में 20 मार्च 2022 को भगवान महावीर कुन्दकुन्द कहान सर्वोदय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 400 इन्द्र-इन्द्राणियों की उपस्थिति में श्री 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समयसार ग्रन्थ पर व्याख्यान एवं पण्डित प्रदीपजी झांझरी के उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ। विधानाचार्य पण्डित संजयजी शास्त्री व पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री थे। ध्वजारोहण श्री महेन्द्रकुमारजी भिण्डी वालों ने किया। समस्त कार्यक्रम श्री राजेशजी सोगानी, श्री कमलजी बोहरा व अन्य ट्रस्टियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

ब्राह्मी सुन्दरी विद्या निकेतन तृतीय वार्षिकोत्सव

दिल्ली : यहाँ श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट दिल्ली के तत्त्वावधान में ब्राह्मी सुन्दरी कन्या विद्या-निकेतन के परिसर में 25 से 27 मार्च तक समयसार, प्रवचनसार एवं नियमसार मण्डल विधान का आयोजन पण्डित संजयजी शास्त्री के विधानाचार्यत्व में हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रात: समयसार (ज्ञायकभाव प्रबोधनी टीका) व रात्रि में संयमप्रकाश/क्रमबद्धपर्याय पर मार्मिक प्रवचन तथा डॉ. वीरसागरजी दिल्ली के जैनदर्शन की अद्भुत विशेषताओं पर व्याख्यान का लाभ मिला। शिविर आमंत्रणकर्ता श्री अजितप्रसादजी दिल्ली व ध्वजारोहणकर्ता श्री राजेशजी दिल्ली थे।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	डॉ. संजीवकुमार गोधा (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

31/03/2022 प्रकाशक :**ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

वैराग्य समाचार

1) उदयपुर निवासी **श्री कन्हैयालालजी टाया** का 105 वर्ष की दीर्घायु में 20 फरवरी 2022 को शान्त परिणामों सहित देहावसान हो गया। मुंबई भूलेश्वर मंदिर के अध्यक्ष रहते हुए आपने डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को सर्वप्रथम दशलक्षण पर्व में आमंत्रित कर उनका अभिनन्दन किया था। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 1100 रूपये की राशि प्राप्त हुई है।

2) कोटा निवासी **श्री नरेन्द्रजी जैन** का 08 फरवरी 2022 को शान्त परिणामों से देह परिवर्तन हो गया। आपकी स्मृति में आपके परिवार द्वारा 1000 रूपये की राशि प्राप्त हुई है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो-वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें- वेबसाईट - www.vitragvani.com

सम्पर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

विद्वत्त्रय अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

रविवार, 27 मार्च 2022 को विश्वास नगर दिल्ली में श्री दिगम्बर जैन दिव्य देशना ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट, अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन, ब्राह्मी-सुन्दरी कन्या विद्या-निकेतन, श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा एवं श्री कुन्दकुन्द कहान चैरिटेबल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तीन वरिष्ट विद्वानों को प्रशस्ति पत्र, रजत श्रीफल, मैडल, साफा, शॉल सहित विशिष्ट उपाधि प्रदानकर सम्मानित किया गया।

न्याय अलंकार की उपाधि से सम्मानित
डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली

उपाध्यायकल्प की उपाधि से सम्मानित
डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर

युवारत्न वाणीभूषण उपाधि से सम्मानित
पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा

इस प्रसंग पर रविवार 27 मार्च 2022 को प्रात:काल नियमसार विधान, गुरुदेवश्री के सी. डी प्रवचन व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समयसार पर प्रवचनोपरान्त विद्वत्त्रय अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने की। मुख्य अतिथि श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुशीलकुमारजी (मुन्नाभाई) कोलकाता, श्री नरेशजी लुहाड़िया, श्री नरेन्द्रजी जैन बाहुबली एनक्लेव, श्री के.के. जैनसाहब, श्री राकेशजी मलिक, श्री मंगलसेनजी जैन, श्री बज्रसेनजी जैन, श्री अनिलकुमारजी जैन, श्री अरविंदकुमारजी जैन, श्री पूरणसिंहजी साहब, श्री निर्मलकुमारजी जैन (पूर्वमहापौर), श्री राजेशजी जैन पुष्पांजलि, श्री आदीशजी जैन, श्री सुनीलकुमारजी जैन, श्री सचिनजी साहब, श्री प्रकाशजी जैन, श्री कुलदीपजी जैन, श्री अमितजी जैन, डॉ. विवेकजी शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, पं. संदीपजी शास्त्री घेवरामोड़, पं. विवेकजी शास्त्री, पं. अनिलजी शास्त्री, पं. सुमितजी शास्त्री, पं. ऋषभजी शास्त्री, पं. अमनजी शास्त्री आदि विशिष्ट महानुभावों के अतिरिक्त सैंकड़ो साधर्मियों व ऑनलाइन माध्यम से जुड़े हजारों दर्शकों की उपस्थिति में देश-विदेश में जैनधर्म का ध्वज फहराने वाले उक्त तीनों विद्वानों को उपाधि प्रदान की गई। कार्यक्रम का संचालन पं. संजयजी शास्त्री व पं. संदीपजी शास्त्री ने किया। प्रशस्ति-पत्र वाचन डॉ. विवेकजी शास्त्री व पं. ऋषभजी शास्त्री ने किया।

ज्ञातव्य है कि तीनों ही विद्वानों ने उपाधियों को अपने पूर्ववर्ती वरिष्ट विद्वानों के प्रति समर्पित करते हुए कहा कि हम जिनवाणी के अवलम्बन से इन उपाधियों को अपने ऊपर हावी नहीं होने देंगे; अपितु इसकी गरिमा बनाएँ रखते हुए सदैव आराधना-प्रभावना के क्षेत्र में अग्रणी रहेंगे। ये उपाधियाँ - निरुपाधि स्वभाव की प्राप्ति में साधक तो हैं ही नहीं; यदि इनका रंचमात्र भी गर्व किया जाए तो मुक्ति के मार्ग में बाधक अवश्य बन जाती हैं।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2022

प्रति,